होगा। मनोधर्म से धर्म अथवा स्वरूप-साक्षात्कार का तत्त्वनिर्णय नहीं हो सकता। अतः भक्त के लिए अपनी स्वरूपभूता अहैतुकी कृपा मे प्रेरित हुए श्रीभगवान् स्वयं अर्जुन के प्रति कर्म-अकर्म के तत्त्व का विवेचन कर रहे हैं। वास्तव में कृष्णभावना-भावित कर्म करने पर ही भवबन्धन से जीव का उद्धार हो सकता है।

30/3

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः।।१७।।

कर्मणः=कर्म का प्रकार; **हि**=निःसन्देह; **अपि**=भी; **बोद्धव्यम्**=जानना चाहिए; **बोद्धव्यम्**=जानने योग्य है; **च**=तथा; **विकर्मणः**=निषिद्ध कर्म का स्वरूप; **अकर्मणः**=अकर्म का तत्त्व; **च**=भी; **बोद्धव्यम्**=जानना चाहिए; **गहना**=गहन है; **कर्मणः**=कर्मतत्त्व की; **गतिः**=गति।

अनुवाद

कर्म, विकर्म और अकर्म के स्वरूप को भलीभाँति जानना चाहिए; क्योंकि कर्म का तत्त्व अति गहन है।।१७।।

तात्पर्य

भवबन्धन से मुक्ति के साधन में गम्भीरतापूर्वक तत्पर मनुष्य के लिए कर्म, अकर्म और विकर्म के भेद को जान लेना आवश्यक है। कर्म, अकर्म एवं विकर्म के सम्बन्ध में गम्भीर स्वाध्याय अपेक्षित है, क्योंकि यह अतिशय गहन तत्त्व है। कृष्णभावनाभावित कर्म और गुणों के अनुसार किये जाने वाले कर्म में भेद को जानने के लिए श्रीभगवान् से अपने सम्बन्ध को जानना होगा। भाव यह है कि जो पूर्ण विद्या से युक्त है, वह जानता है किं प्रत्येक जीव भगवान् का नित्यदास है और इस कारण कृष्णभावनाभावित कर्म करना जीवमात्र का कर्तव्य है। सम्पूर्ण भगवद्गीता का यही लक्ष्य है। इस भावना का विरोध करने वाले अन्य सब निष्कर्ष एवं परिणाम 'विकर्म' हैं। इस सम्पूर्ण तत्त्व ज्ञान के लिए कृष्णभावना के प्रामाणिक आचार्यों का सत्संग करके उनसे यह रहस्य हृदयंगम करे। ऐसा करना साक्षात् श्रीभगवान् से शिक्षा ग्रहण करने जैसा कल्याणकारी है। महाभागवत के आश्रय के बिना तो बड़े से बड़ा बुद्धिमान् भी मोहित हो जाता है।

30/3

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्।।१८।।

कर्मणि=कर्म में; **अकर्म**=अकर्म; **यः**=जो; **पश्येत्**=देखता है; **अकर्मणि**=अकर्म में; **च**=भी; **कर्म**=सकाम कर्म; **यः**=जो; **सः**=वह; **बुद्धिमान्**=बुद्धिमान् है; **मनुष्येषु**=मनुष्यों में; **सः**=वह; **युक्तः**=युक्त है; **कृत्स्नकर्मकृत्**=सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त होने पर भी।

अनुवाद

जो कर्म में अकर्म को देखता है और अकर्म में कर्म को देखता है, वह पुरुष